रिकार्ड– आखिर वो दिन आया ..... ओमशांति प्रातःक्लास 18–7–67
रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं। समझावेंगे तो जरूर शरीर द्वारा ही ना। आत्मा शरीर बिना कोई भी काम नहीं कर सकती है। रुहानी बाप को भी एक ही बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर शरीर लेना पड़ता है। यह संगमयुग भी है। इनको पुरुषोत्तम युग भी कहेंगे ;क्योंकि इस संगमयुग के बाद ही फिर सतयुग आता है। सतयुग को भी पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। यह भी पुरुषोत्तम युग है। बाप आकर स्थापना भी पुरुषोत्तम संगमयुग की ही करते हैं। संगम पर आते हैं तो वो जरूर ही पुरुषोत्तम युग है। यहां ही बच्चों को पुरुषोत्तम बनाते हैं। फिर तुम पुरुषोत्तम बनकर नई दुनियां में रहते हो। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम ते उत्तम पुरुष। यह है (ल.ना.)सबसे उत्तम पुरुष। यह ज्ञान भी तुमको ही है। और धर्म वाले भी मानेंगे कि बरोबर यह हैविन का मालिक है। भारत की महिमा बड़ी भारी है ;परंतु भारतवासी ही नहीं जानते हैं। कहते भी हैं कि फलाना स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग चीज क्या है वो पता ही नहीं है। आप ही सिद्ध करते हैं कि वो स्वर्ग में गया, तो माना है कि खुद नर्क में है और वो भी पहले नर्क में था। हैविन तब हो जबकि बाप स्थापन करे। वो तो नई दुनियां को ही कहा जाता है। दो चीजें हैं ना। स्वर्ग और नर्क। मनुष्य तो स्वर्ग को लाखों वर्षों का कह देते हैं। तुम बच्चे समझते हो कि कल स्वर्ग था तब इन्होंने राजाई की थी। अब फिर बाप से वर्सा ले रहे हैं। बाप कहते हैं कि मेरे लाडले बच्चों तुम्हारी आत्मा पतित है इसलिए ही हेल में हो। भल करके कहते हैं कि कलियुग 40हजार वर्ष का है। फिर भी कलियुग तो है ना। तो जरूर कलियुगवासी ही कहेंगे। पुरानी दुनियां ही तो है ना। मनुष्य तो बिचारे घोर अंधेरे में हैं। पिछाड़ी में जब आग लगेगी तो यह सब खतम हो जावेगा। तुम्हारी प्रीत बुद्धि है ;परंतु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जितनी2 प्रीत बुद्धि होगी उतना ही उंच पद पावेंगे। सवेरे उठकर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भले प्रेम के आंसू भी आवे ;क्योंकि बहुत समय के बाद आकर बाप मिलता है। बाबा आप तो हमको दुःख से आकर छुड़ाते हो। हम विषय सागर में गोते खाते हुये कितने दुःखी होते आये हैं। अभी तो यह है रौरव नर्क। विषय वैतरिणी नदी में सभी पड़े हुये हैं ना। अभी तुम बच्चों को बाबा ने सारे चक्र का राज समझाया है। मूलवतन क्या है वो भी पहले तो तुम जानते नहीं थे। अपने को पतित,भ्रष्टाचारी अपने को आप ही कहते हैं। इनको कहते हैं कांटों का जंगल। स्वर्ग को कहा जाता है गार्डन ऑफ अल्लाह। फूलों का बगीचा। बाप को बागवान कहते हैं ना। तुमको फूल से फिर कांटा कौन बनाते हैं?रावण?तुम बच्चे समझते हो कि बरोबर भारत स्वर्ग था। अब जंगल है। जंगल में तो जनावर,बिच्छू,टिण्डन आदि सब कुछ रहते हैं। सतयुग में कोई खौफनाक जनावर आदि नहीं होते हैं। शास्त्रों में तो बहुत गपोड़े लगा दिये हैं। कृष्ण को सांप ने डसा फिर यह हुआ। कृष्ण को ही फिर द्वापर में ले गये हैं। बाप ने समझाया कि भक्ति तो बिल्कुल अलग चीज है। दुर्गति में गिराने वाली है। ज्ञान सागर एक ही बाप है। ऐसे नहीं है कि ब्रह्मा वा शंकर वा विष्णु कोई ज्ञान का सागर है। नहीं। पतित–पावन भी एह ही ज्ञान के सागर को ही कहेंगे। ज्ञान से ही मनुष्य की सदगति होती है। सदगति के स्थान दो हैं। मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम। अब तुम बच्चे जानते हो कि यह राजधानी स्थापन हो रही है ;परंतु है गुप्त। बाप ही आकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं और तो सभी अपने2 चोले ही में आते हैं। बाप को अपना चोला तो है नहीं। इसलिए ही इनको निराकार गॉडफादर कहा जाता है। बाकी सब है साकार। इनको कहा जाता है इनकारपोरियल गॉडफादर। इनकारपोरियल आत्माओं का। तुम आत्माएं भी वहां ही रहती हो। बाप भी वहां रहते हैं। वहां पर मूलवतन में कोई भी आवाज का गम नहीं है। सूक्ष्मवतन का तो कोई पार्ट ही नहीं है। वो तो चिटचैट का है। पियर घर से ससुर घर जाते हैं तो संगम पर मिलते हैं। वो है बीच की मुलाकात। बाकी तो वहां पर कुछ भी रखा हुआ नहीं है। यह सब है सा.। बाप कहते हैं कि तुम्हारा कल्याण तो है ही एक बात में। बाप को याद करो। मनमनाभव। बस। बाप का बच्चा बना। .....

वर्सा तो अंडरस्टुड ही है। अल्फ को याद किया तो वर्सा तो है ही है। वर्सा है सतयुग नई दुनियां का। इस पुरानी दुनियां का विनाश भी जरूर होना ही है। अमरपुरी में जाना ही है। अमरनाथ तुम पार्वतियों को अमरकथा सुनाते हैं। बाकी तो सभी हैं गपोड़े। तीर्थों पर कितने ही मनुष्य जाते हैं। अमरनाथ पर कितने जाते हैं। वहां पर तो कुछ भी नही है। सभी है ठगी। पहाड़ों पर पार्वती को कैसे बैठकर कथा सुनावेंगे?झूठ ही झूठ है। सच्च की तो रत्ती भी नहीं है।...तो सब तिलसम (जादू)गाया भी जाता है ना झूठी दुनियां झूठी माया.....इसका भी तो अर्थ होना चाहिए। यहां पर है ही झूठ। यह भी ज्ञान की बात है। ऐसे नहीं कि गिलास को गिलास कहना झूठ है। भक्ति मार्ग में (तो)सभी झूठ है। सच्च बोलने वाला एक ही बाप है। अभी तुम जानते हो कि बाबा सच्ची2 सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं। झूठे पत्थर झूठे मोती भी होते हैं ना। आजकल तो झूठ का बहुत शो है। उनकी चमक ऐसी होती है जो कि सच्च से भी अच्छी। यह झूठे पत्थर पहले नहीं थे। पीछे विलायत से आये हैं। झूठे सच्चे मिला देते थे तो पता ही नहीं पड़ता था। फिर ऐसी चीजें आईं जिससे ही परखते थे। मोती भी ऐसे ही झूठे निकले थे जो कि जरा भी पता नहीं पड़ता था। अब यह तो हैं ही सच्चे। कहते भी हैं ना कि सच्च कब भी छुप नहीं सकता है। बाप जब आते हैं तो आकर सच्ची कथा सुनाते हैं। तुम बच्चों को कोई संशय नहीं रहता है। संशय वाले फिर आते नहीं हैं। प्रदर्शनी में कितने ढेरों आते हैं। बाप कहते हैं कि अब बड़े2 दुकान निकालो। बाकी तो सभी हैं झूठे दुकान। सही एक तुम्हारा सच्चा दुकान है। तुम बच्चे दुकान खोलते हो। बड़े2 दुकान खोलो। बड़े2 सन्यासियों को भी बड़े2 दुकान होते हैं तो ही बड़े2 मनुष्य आते हैं। शंकराचार्य बड़ा है ना तभी तो इन्दिरा गांधी भी जाती है। देखते भी हैं कि शिवबाबा (का) पुजारी है। तुमने प्रैक्टिकल में देखा भी है कि कैसे पूजा करते हैं। वो तो कब भी पूज्य हो नहीं सकता है। पुजारी भक्त तो सभी हैं ना। भक्त2 को माथा कैसे टेकेंगे। पुजारी पूज्य को माथा टेकते हैं। उनको भी प्रेम से समझाना है। तभी तो समझेंगे फिर अंदर भी खावेगा ;परंतु कर क्या सकते हैं। सारा मान,सारी बादशाही चट हो जावे। यह तो जैसे कि भारत के महाराजायें हैं। सभी उनको माथा टेकते हैं। राजायें भी माथा टेकते हैं। उनका शास्त्रों पर वाद–विवाद कैसे चलता है,क्या2 कहते हैं वो तो बाबा कहते हैं कि बच्चों ने भी देखा था। ऐसे युद्ध करते हैं कि जो लड़ भी पड़ेंगे। सतयुग में तो शास्त्र आदि अथवा पूजा होती ही नहीं है। भक्तिमार्ग की सामिग्री बिल्कुल ही अलग है। ऐसे नहीं कहेंगे कि भक्ति तो शुरू से ही चलती आई है। नहीं, ज्ञान से होती है सदगति अर्थात् दिन। वहां है सम्पूर्ण निर्विकारी। विश्व के मालिक थे। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि ल.ना. विश्व का मालिक थे। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी। बस, और तो कोई धर्म ही नहीं होता है। बच्चों, गीत भी सुना है ना कि आखिर तो वो संगम पर दिन आया आज जबकि हम बेहद के बाप से आकर मिले हैं। बेहद का वर्सा पाने लिए पुरुषार्थ करते हैं। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे कि आखिर वो दिन आया आज। वो लोग तो समझते हैं बहुत अनाज होगा,यह होगा। समझते हैं कि स्वर्ग की स्थापना हम करते हैं। गांधी स्वर्ग की स्थापना करते थे ;परंतु क्या हुआ?जो पहले सुख था वो भी अब नहीं रहा है। गांधी तो जो भूख हड़ताल,पिकेटिंग ,पत्थर मारना आदि सिखा कर गये हैं वो ही सब अभी करते रहते हैं। सभी सामने आ रहा है। समझते हैं कि स्टुडेंट्स का न्यू ब्लड है। यह बहुत मदद करेंगे। इसलिए ही गवर्मेंट इस पर बहुत मेहनत करती है और फिर पत्थर आदि भी यही मारते हैं। हंगामा मचाने लिए पहले2 स्टुडेंट्स को ही छेड़ते हैं। वो बहुत होशियार होते हैं। उनको न्यू ब्लड कहते हैं। अब न्यू ब्लड की तो बात ही नहीं है। वो तो है ब्लड कनैक्शन। अब तुम्हारा है रुहानी कनैक्शन। कहते हैं बाबा मैं आपका दो मास,चार साल का बच्चा हूँ। कई बच्चे तो रुहानी बर्थ डे भी मनाते हैं। ईश्वरीय बर्थ डे ही मनाना चाहिए। वो जिस्मानी बर्थ डे को तो कैंसिल कर देना चाहिए। हम तो ब्राह्मणों को ही खिलावेंगे

पिलावेंगे। मनाना तो यही चाहिए ना। वो है आसुरी जन्म। यह है ईश्वरीय जन्म। रात–दिन का फर्क है ;परंतु जबकि निश्चय में बैठे .....। ऐसे भी नहीं कि ईश्वरीय जन्म मना कर फिर आसुरी जन्म में चले जावें। ऐसे भी होता है। ईश्वरीय जन्म मनाते2 फिर रफूचक्र हो जाते हैं। बहुत करके पुरुष बर्थ डे मनाते ही हैं। आजकल तो मैरिज डे भी मनाते हैं। शादी को तो जैसे कि बहुत अच्छा शुभ काम समझते हैं। जहन्नम में जाने का दिन भी मनाते हैं। वंडर है ना। बाप बैठ यह सब बातें समझाते रहते हैं। अब तुमको तो अपना ईश्वरीय बर्थ डे ब्राह्मणों के साथ ही मनाना है। हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं। हम बर्थ डे मनाते हैं। तो शिवबाबा की याद रहेगी। जो निश्चय बुद्धि हैं उनको ही जन्मदिन मनाना चाहिए। वो आसुरी जन्म ही जिससे ही की भूल जावे। यह सब बाबा राय उनको देते हैं जो कि पक्के निश्चय बुद्धि हो तो। बस अब तो हम बाबा के ही बन गये। फिर अंत मते सो गते हो जावेगी। बाप की याद में मरेंगे तो दूसरा जन्म भी वैसा ही मिलेगा। नहीं तो कहते हैं कि अंत काल जो स्त्री सिमरे.....। यहां पर फिर कहते हैं अंत समय में गंगा का तट हो। गंगा जल मुख में हो तब प्राण तन से निकले। यह सारी भक्ति मार्ग की बातें। तुमको बाप समझाते हैं कि शरीर छूटे तो भी तुम स्वदर्शन चक्रधारी ही रहो। बुद्धि में ....बाप और चक्र ही याद रहे। बस। सो जरूर जब याद करेंगे तो ही अंत काल में याद आवेगा ना। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो ; क्योंकि अब तुम बच्चों को वापस जाना है नंगे होकर। यहां पर पार्ट बजाते–बजाते तमोप्रधान बने हो। अब सतोप्रधान बनना है। अब फिर सतोप्रधान बनना है। इस समय आत्मा ही अपवित्र है तो शरीर ही पवित्र कैसे मिल सकता है?बाबा ने बहुत मिसाल बताये हें। फिर भी तो जवाहरी है ना। खाद जेवर में नहीं सोने में पड़ती है। 24 से 22 कैरट बनाना होगा तो थोड़ी सी चांदी डालेंगे। अब तो सोना है ही नहीं। सबसे लेते रहते हैं। आजकल तो देखो ना नोट भी कैसे2 बनाये हैं। कागज भी नहीं रहा है। बच्चे समझते हैं कि कल्प2 ही ऐसा होता आता है। जांच रखते हैं। लाकर्स आदि खोलते हैं। जब किसी का झाड़ू लिया जाता है ना। गायन भी है ना किनकी दबी रही धूल में.....ी। आग भी जोर से लगती है। तुम बच्चे जानते हो कि यह होना ही है इसलिए ही यह बैग बैगेज तैयार कर रहे हो। और कोई को पता थोड़े ही है। तुमको ही वर्सा मिलता है 21जन्मों के लिए। तुम्हारे ही पैसों से भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। जिसमें तो फिर तुम्हीं वास करेंगे। बाप कहते हैं कि तुम अपनी पढ़ाई से अपने को (आप) ही तिलक देते हो। गरीब निवाज बाप आये हैं तुमको ऐसी दुनियां ,स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए। पढ़ाई से ही तो बनेंगे ना। टीचर का तो पढ़ाना धर्म है। कृपा,आशीर्वाद की बात नहीं है। टीचर को सरकार से तनख्वाह मिलती है तो वो तो जरूर पढ़ावेंगे ही ना। तुमको बड़ी गवर्मेंट से वर्सा मिलता है। तुम पढ़ते हो फिर पढ़ाते हो। जितना पढ़ावेंगे,बनावेंगे उतना ही बड़ा मर्तबा मिलता है। पदमपति बनते हो। कृष्ण के पावों में पदम की निशानी देते हैं। तुम यहां पर आये हो भविष्य में पदमपति बनने। सभी बहुत सुखी साहुकार बनते हो। अमर बनते हो। तुम काल पर विजय पहनते हो। इन बातों को मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है। अमर बन जाते हो। उन्होंने फिर पांडवों के चित्र ही लम्बे–चौड़े बना दिये हैं। समझते हैं कि पांडव इतने लम्बे थे। अब पांडव तो तुम हो। कितना रात–दिन का फर्क है। मनुष्य कोई भी जास्ती लम्बा होता नहीं है। छः फुट का ही होता है। यह तो बहुत लम्बे2 बना देते हैं। भक्तिमार्ग में तो देखो क्या2 होता है। कितने पुराने2 चित्र हैं। पुराने ते पुराना चित्र होगा भक्तिमार्ग में। पहले2 शिवबाबा की ही भक्ति होती है। वो तो बड़ा बनावेंगे ही नहीं। पहले शिवबाबा की भक्ति होती है ;परंतु अब तो तुमको अव्यभिचारी याद में रहना है। गुडमार्निंग।